''टीचर्स बहिनों के प्रथम ग्रुप में प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश''

(दादी गुल्जार)

आज अमृतवेले बापदादा के पास आप सबका यादप्यार और उमंग-उत्साह का समाचार लेते बाबा के साथ दूर से दृष्टि लेते, दृष्टि में समाते हुए सम्मुख पहुंच गई। बाबा ने अपने हृदय में समा लिया और बहुत शक्तिशाली रूप से मिलन मना रहे थे। कुछ समय तो ऐसे लगा जैसे मैं भी शक्ति स्वरूप के अनुभव में मास्टर सर्वशक्तिवान स्थिति के अनुभव में खो गई। कुछ समय के बाद बाबा बोले, बच्ची बाप समान बनने वाले मेरे सर्विसएबुल बच्चे और साथियों का क्या समाचार लाई हो? तो मैं बोली बाबा इस भट्ठी में तो सबके दिल में परिवर्तन-परिवर्तन का ही साज बज रहा है, सब बहुत हिम्मत से कह रहे हैं कि अभी बदलना ही है। बाबा सुनते हुए बोले, बच्चे अब तो समय और प्रकृति की भी यही पुकार है कि हे परिवर्तन के आधारमूर्त, उद्धारमूर्त अब को कब नहीं करो। रहम करो, कृपा करो, क्या यह दु:ख की पुकार बच्चों को सुनने नहीं आती? बच्चों ने हिम्मत तो अच्छी रखी है। बापदादा खुश है लेकिन आगे चलते हिम्मत के साथ उमंग-उत्साह भी साथ रहे क्योंकि उमंग-उत्साह ही फरिश्ते स्वरूप के पंख हैं। जहाँ उमंग-उत्साह है, हिम्मत है वहाँ कोई भी समस्या समाधान के रूप में बदल जाती है इसीलिए अब एकाग्रता और दृढ़ता की शक्ति से विशेष चारों ओर निर्विघ्न शान्ति का वायुमण्डल फैलाओ। साथ-साथ अपने अपने सेवास्थान पर कोई भी छोटी मोटी बात आती भी है तो एक दो को शुभभावना, शुभकामना का सहयोग दे समय और संकल्प को सफल करो और कराओ। एक दो को हिम्मत के पंख लगाए उड़ो और उड़ाते रहना। एक दो को सदा कोई न कोई गुण की गिफ्ट देते रहना और लेते रहना, साथ साथ सदा अपने चार खाते देखते रहना -- एक शुभ संकल्प का खाता, दूसरा सेवा का खाता और तीसरा सुख देने का खाता, चौथा - दुआओं का खाता और सदा यही ख्याल रहे कि समय, संकल्प और स्थूल धन कितना सफल किया और कितना सफल कराया? क्योंकि सफल करने से ही सफलतामूर्त बन जायेंगे।

उसके बाद बाबा ने कहा कि बच्चों ने जो अपने से वायदा किया है, तो जो वायदा करते हैं, हिम्मत रखते हैं उनको बल और फल मिलता है। तो आज मैं बच्चों को उसका फल देता हूँ, फल क्या दिया? तो बाबा ने कहा आज बच्चों को वतन के बगीचे की सैर कराता हूँ। तो आप सभी बड़े उमंग-उत्साह से वतन में इमर्ज हो गये। बाबा आगे आगे चले और हम सभी बाबा के पीछे पीछे थे। बीच बीच में बाबा खड़ा करके वरदान का हाथ ऐसे करता था फिर उसके बाद बाबा ने कहा अच्छा बच्चे बगीचे के फल खा लो। तो सभी फल तोड़कर ले आये, बाबा ने सबको बगीचे में बिठा दिया और पूछा कि आप सबने सूक्ष्मवतन का फल खाकर देखा है! वह फल इतने नर्म थे जो आपको काटने की जरूरत नहीं, तो सभी ने बहुत प्यार से फल खाये। फिर बाबा ने सबको बगीचे में बिठा दिया और कहा बच्ची जैसे आपने चार दिन विशेष नुमाशाम के समय योग की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं का अनुभव किया, ऐसे रोज़ 7 से 7.30 या 8.00 बजे तक यह मन की ड्रिल जरूर करना, इससे आप में शक्ति भरेगी। जैसे शरीर की ड्रिल से शक्ति आती है वैसे इसमें भी शक्ति भरेगी। फिर बाबा ने कहा बच्चों ने 4 दिन विशेष भट्ठी की है तो इन्हों को सौगात क्या देंगी? हमने कहा बाबा आप तो एक सेकण्ड में सौगातें इमर्ज कर देते हो, तो बाबा ने आज हमारे ग्रुप को बहुत एकस्ट्रा सौगात दी। सौगात क्या थी! बहुत बड़े बड़े सफेद हीरे इमर्ज हो गये, जिसमें ब्रह्मा बाबा और ऊपर शिवबाबा का चित्र बहुत सुन्दर चमक रहा था। तो बाबा ने यह सौगातें इमर्ज की और कहा आज मैं एक एक बच्चे को हाथ से सौगात दूंगा। बाबा को बच्चों की हिम्मत पर प्यार है तो बाबा ने कहा जो 20 से 40-50 वर्ष की हैं वह पहले आवें। तो बाबा ने ऐसे एक एक को अपनी बांहों में समाते हुए अपने हाथों से सबको सौगात दी, फिर सबको बहुत स्नेह की दृष्टि वा यादप्यार देते, हिम्मत उमंग का वरदान देते हुए मुझे साकार वतन में भेज दिया।